बालकृष्ण भट्ट (1844–1914 ई.)

आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु कालीन श्रेष्ठ साहित्यकारों में बालकृष्ण भट्ट का नाम अत्यंत महत्त्वपूर्ण निबंधकारों में माना जाता है। आप का जन्म 30 जून 1844 ई० को उत्तर प्रदेश राज्य के प्रमुख तीर्थ स्थान 'प्रयाग' में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा वहीं पर मिशन हाई स्कूल से हुई, बालकृष्ण बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि वाले विद्यार्थी थे, हिन्दी और संस्कृत में विशेष रुचि होने के कारण उसी स्कूल में संस्कृत के अध्यापक हो गए। किंतु स्वतंत्र प्रवृत्ति के होने के कारण थोड़े समय के बाद ही त्याग पत्र दे दिया। आप हिन्दी-संस्कृत के विद्वान होने के साथ उर्दू-अँग्रेजी के ज्ञान में भी पारंगत थे। इस कारण 1877 ई. में 'प्रयाग' की ही 'हिन्दी-वर्धिनी सभा' के मुख्य पत्र 'हिन्दी-प्रदीप' के संपादक नियुक्त हो गये। वास्तव में आपका साहित्यिक जीवन संपादन के साथ ही प्रारम्भ हुआ। इस पत्र में विषय वैविध्य की दृष्टि से साहित्य, समाज, इतिहास, परिहास, दर्शन राज-सम्बन्धी दैनिक समाचार अधिक समाहित किये गये थे।

बालकृष्ण भट्ट भारतेन्द युग के साहित्यकार हैं। निबन्धों के कथ्य में व्यक्ति, समाज के सक्रिय योग दान के कारण समीक्षकों ने इनके निबंधों में 'एडीसन' जैसे प्रभाव का संतुलन माना है। इनके प्रमुख निबन्धों में आँसू, मन की दृढ़ता, नाक, कान, बातचीत प्रतिभा, आत्म प्रशंसा, साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है'' जैसे बहुचर्चित एवं बहुपठित हैं। इनके निबंधों की संख्या हजार तक है, भट्ट जी ने निबंधों के अतिरिक्त उपन्यास, कहानी और नाटक भी लिखे हैं– इनमें नूतन ब्रह्मचारी (1886) सौ अजान एक सुजान (1890) रसातल यात्रा (1892) और मेघनाद-वध, किरातार्जुनीय, शिशुपाल वध, आदि प्रसिद्ध हैं।

संक्षेप में विषय वैविध्य, अभिव्यंजना-कौशल, ग्रहणीय भाषा-प्रयोग मौलिक चिन्तन की दृष्टि से बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के सर्वप्रिय निबंधकार हैं। बालकृष्णभट्ट जी का प्रस्तुत संकलन में निबंध 'जबान' ललित शैली में रचित अद्भुत साहित्यिक एवं शिक्षाप्रद विशेषताओं से ओतप्रोत हैं।

पाठ सारांश

बालकृष्ण भट्ट ने साहित्य के सार्वकालिक रूप को प्रतिष्ठापित किया है। साहित्य में अपने-अपने भाषिक समूहों के सम्पूर्ण वैचारिक, भावात्मक स्पन्दों एवं

Scanned with CamScanner

आदर्शों का एक रूप मुखर होता है। निबन्धकार के अनुसार किसी भी जाति का उल्लास, विषाद, वृत्ति, प्रवृत्ति उनके साहित्य में मुखर होता है। साहित्य को लेखक ने जनसमूह के चित्र को चित्रपट कहा है। लेखक ने पुराने भारतीय वैदिक संस्कृत से लेकर प्राकृत भाषाओं से होते हुए परवर्ती अपभ्रंशों तथा अन्य प्रांतीय भाषाओं एवं हिन्दी के भाषिक समाजों का विवेचन प्रस्तुत किया है।

भट्ट जी ने इस निबन्ध में भारत की अवनीति का विस्तृत विवरण दिया है। उनके अनुसार वे अपनी सामूहिक दुर्दशा पर विचार करें। भारतीय समाज के अवदान को इसमें देखा जा सकता है। इनके कारणों की पड़ताल की है। समाज का सरोकार साहित्य में तो फलीभूत होता है। निबन्ध की भाषा एकदम कसी हुई है। इसमें मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है।

Scanned with CamScanner